पद २७८

(राग: झिंजोटी - ताल: धुमाळी)

मानिकके प्रभु नाथ कृष्णजी। तोहे चरनन जाऊं बलिहारी।।२।।

- मय्या मोहे शाम देवत गारी। मोहे झडकके चुनरी फारी रे।।ध्रु.।।

- द्धि तेरो खायो माखन खायो। ईने द्धिकी मथनिया फोरी रे।।१।।